36

पानी पर चलना

(14:22-36)

इस पाठ में चेलों से नाव पर गलील की झील के दूसरी ओर जाने को कहा गया था। चेलों के परेशान होने और उसके पानी के ऊपर उनके पास चलकर आने और तूफ़ान को थामने से यीशु की सामर्थ दिखाई दी थी।

यीशु अकेले प्रार्थना करता है (14:22, 23)

[22]तब उस ने तुरन्त अपने चेलों को नाव पर चढ़ने के लिए विवश किया कि वे उस से पहले पार चले जाएं, जब तक वह लोगों को विदा करे। [23]वह लोगों को विदा करके, प्रार्थना करने अलग पहाड़ पर चला गया; और सांझ को वह वहां अकेला था।

आयत 22. पांच हज़ार को खिलाने के बाद लगता है कि यीशु को **लोगों को विदा** करने की जल्दी थी। उनके उसे अपना राजा बनाने की इच्छा की चिन्ता होगी (यूहन्ना 6:14, 15)। उस का ''राज्य इस संसार का नहीं'' है (यूहन्ना 18:36), इस कारण उसे सांसारिक सिंहासन पर शासन करने या युद्ध में उनकी अगुआई करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

उस ने तुरन्त अपने चेलों को नाव पर चढ़ने के लिए विवश किया कि वे उस से पहले पार चले जाएं। क्रिया शब्द ''विवश किया'' (*anankazō*) का अर्थ ''मजबूर,'' ''बाध्य,'' या ''ज़बर्दस्ती आग्रह'' हो सकता है। यीशु ने अपने चेलों को लोगों की राष्ट्रवादी भावनाओं में बहने से उनकी रक्षा करने के लिए जल्दी की। उस की शिक्षा के बावजूद चेले आम तौर पर राज्य के सांसारिक विचार से भरे रहते थे (20:20, 21; प्रेरितों 1:6) और आसानी से लोगों से वे प्रभावित हो सकते थे। ''पार'' का अर्थ झील के पश्चिम की ओर था, जहां से वे पहले चले थे (14:13) और जहां उन्होंने जाना था (14:34)।

आयत 23. इसके अलावा यीशु ने **लोगों को विदा** इसलिए भी किया, क्योंकि वह **प्रार्थना करने** के लिए **अकेला** होना चाहता था। सुसमाचार के विवरणों में यीशु के प्रार्थना करने के कम से कम पांच वृत्तांत हैं, परन्तु मत्ती में उनमें से केवल दो का उल्लेख है। एक तो यहां पर मिलता है और दूसरा गतसमनी में उस की प्रार्थना है (26:36-44)। इस अवसर पर यीशु प्रार्थना करने के लिए **पहाड़** (*oros*) या ''पहाड़ी'' पर चढ़ गया। मत्ती रचित सुसमाचार में पहाड़ और पहाड़ियां प्रमुखता से पाई जाती हैं (4:8; 5:1; 8:1; 15:29; 17:1, 9; 21:1; 24:3; 26:30; 28:16)। यह पक्का पता नहीं है कि यीशु ने कितनी देर तक प्रार्थना की। उस ने **सांझ को** सम्भवतया सूर्यास्त के बाद आरम्भ किया। उसके झील पर चलकर चेलों के पास जाने के समय ''रात का चौथा पहर'' था, जो 3:00 बजे प्रात: के बाद होगा (14:25)। यह प्रार्थना करने

के लिए लम्बा समय लग सकता है, परन्तु यीशु ने कम से कम एक बार सारी रात प्रार्थना की (लूका 6:12)।

यीशु पानी पर चलता है (14:24-27)

[24]उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा सामने की थी। [25]और यीशु रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया। [26]चेले उस को झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए और कहने लगे, ''यह भूत है!'' और डर के मारे चिल्लाने लगे। [27]तब यीशु ने तुरन्त उन से बातें कीं, और कहा, ''ढाढ़स बांधो! मैं हूं; डरो मत!''

आयत 24. यीशु के पहाड़ से नीचे आने के समय, **नाव झील के बीच** थी। ''बीच'' के बजाय यूनानी धर्मशास्त्र में मूलतया ''बहुत स्टेडिया'' कहा गया है। एक *स्टेडियन* लगभग 607 फुट का यूनानी-रोमी नाप था। यूहन्ना रचित सुसमाचार यह कहते हुए कि चेले ''तीन-चार मील के लगभग'' अर्थात ''पच्चीस से तीस स्टेडिया'' निकल गए थे, अधिक स्पष्ट बताता है (यूहन्ना 6:19)। मरकुस कहता है कि ''नाव झील के बीच में थी'' (मरकुस 6:47)।[1] भाषा किसी भी ऐसी सम्भावना को कि यीशु तट पर स्तही पानी में या रेत के टीले पर चल रहा था, निकाल देती है।

नाव में चेले प्रचण्ड **हवा** और **लहरों** से **डगमगा** रहे थे। अनुवादित शब्द ''डगमगा'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द (*basanizō*) का अर्थ ''घोर कष्ट'' या ''परेशान'' हो सकता है। यह उनकी बड़ी निराशा का संकेत देता है (8:6 पर टिप्पणियां देखें)। हवाएं **सामने की** थीं, जिसका अर्थ है कि वे नाव को जहां जाना था, वहां से दूर ले जाने की कोशिश कर रहे थे। चेलों के लिए इसे नियन्त्रण में रखने का एकमात्र ढंग इसे खेता जाना था, और मरकुस 6:48 कहता है कि वे ''खेतते-खेतते घबरा गए'' थे। वे लहरों से संघर्ष कर रहे थे, पर कुछ आगे नहीं बढ़ पा रहे थे।

आयत 25. यीशु ने अपने चेलों को परेशानी के उनके समय में छोड़ा नहीं। **यीशु रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया**। ''झील पर चल'' कर यीशु ने एक बार फिर यह साबित करते हुए कि वह सचमुच में परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र है, पानी के ऊपर अपनी सामर्थ दिखाई (8:26, 27 पर टिप्पणियां देखें)।

''चौथे पहर'' संकेत देता है कि वे लगभग सारी रात झील में रहे थे। रोमी लोगों ने निकट आ रहे शत्रुओं का पता लगाने के लिए और कैदियों की रखवाली के लिए सिपाहियों की ड्यूटी लगाने के उद्देश्य से रात को चार पहरों[2] में बांटा हुआ था। ''पहर'' के लिए यूनानी शब्द (*phulakē*) का अनुवाद अन्य संदर्भों में ''बंदीगृह'' या ''जेलखाना'' हुआ है (देखें 5:25; 14:3, 10)। पहला पहर 6:00 बजे सायं से 9:00 सायं तक, दूसरा पहर 9:00 सायं से 12:00 प्रात: तीसरा पहर 12:00 प्रात: से 3:00 प्रात: तक और चौथा पहर 3:00 बजे प्रात: से 6:00 प्रात: तक होता था।

आयत 26. पहले से ही डरे हुए **चेले** यीशु को पानी के ऊपर उनकी ओर आते **देखकर**, और भी **घबरा गए**। मरकुस ने यह विचित्र टिप्पणी जोड़ी है कि वह ''उनसे आगे निकल जाना चाहता था'' (मरकुस 6:48)। चेले **कहने लगे**, **''यह भूत है!'' और डर के मारे चिल्लाने**

लगे। पानी के ऊपर और कौन चल सकता था? ''भूत'' के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*phantasma*) छाया का संकेत देता है; यह वही शब्द है जिससे ''साया'' शब्द निकला है। उस समय की प्रसिद्ध मान्यता थी कि झील पर बुरी आत्माओं का बसेरा है (देखें प्रकाशितवाक्य 13:1)। इन चेलों को लगा होगा कि उस ''भूत'' का इरादा उन्हें हानि पहुंचाने का है।[3]

आयत 27. उनके डर को समझते हुए यीशु ने **तुरन्त** उन्हें आवाज दी, **''ढाढ़स बांधो, मैं हूं, डरो मत।''** ''ढाढ़स बांधो'' कहकर प्रभु अपने चेलों को तसल्ली दे रहा था (देखें 9:2, 22)। उस ने उनके संकट की वास्तविकता से इनकार नहीं किया, परन्तु अपनी उपस्थिति के कारण उन्हें आश्वस्त किया कि उनका भय निकाल दिया जाएगा।[4] ''मैं हूं'' (*egō eimi*) ज़ोर देते हुए (''मैं हूं!'') कहना है जो न केवल यीशु की उपस्थिति की घोषणा करता है बल्कि उस की ईश्वरीयता का संकेत भी देता है। यही वाक्यांश स्वयं परमेश्वर के प्रकाशन के सम्बन्ध में सप्तत्ति अनुवाद में मिलता है (निर्गमन 3:14; यशायाह 43:10–13; 51:12)। यूहन्ना रचित सुसमाचार में यह यीशु के ईश्वरीय मसीहा होने के दावों में बार-बार मिलता है।[5] यहां उसके शब्द उसके कामों से मेल खाते हैं, क्योंकि केवल परमेश्वर ही झील के ऊपर चल सकता है (अय्यूब 9:8; भजन संहिता 77:19; हबक्कूक 3:15)।

पतरस पानी पर यीशु के पास आता है (14:28-33)

[28]पतरस ने उस को उत्तर दिया, ''हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।'' [29]उस ने कहा, ''आ।'' तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। [30]पर हवा को देखकर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा, ''हे प्रभु, मुझे बचा!'' [31]यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, ''हे अल्पविश्वासी, तूने क्यों संदेह किया?'' [32]जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। [33]इस पर जो नाव पर थे, उसे दण्डवत करके कहा, ''सचमुच तू, परमेश्वर का पुत्र है।''

आयत 28. पतरस को अब यकीन हो गया कि यह यीशु ही है, **''हे प्रभु यदि तू ही है तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।''** पतरस के शब्द इस बात की स्वीकृति हैं कि पानी के ऊपर चलने के लिए उसे प्रभु की अनुमति चाहिए थी। उसे मालूम था कि वह अनुमति के बिना नहीं चल सकता था।

पतरस ने अगले कई अध्यायों में लिखित कई घटनाओं में मुख्य भूमिका निभाई (14:28–31; 15:15; 16:17–19; 17:24–27; 18:21)। कइयों ने इसे कलीसिया में पतरस की प्रमुखता की ओर ध्यान दिलाने के लिए इसकी व्याख्या की है। पतरस ने चाहे महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी पर अपनी कलीसिया का सिर केवल मसीह ही है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18)। कई मामलों में यह कहानियां पतरस की कमज़ोरियों को दिखाती हैं (सभी चेलों के प्रतिनिधि के रूप में)।

आयत 29. सुसमाचार का केवल मत्ती का वृत्तांत ही है जिसमें पतरस की विनती और इसके बाद की घटना का उल्लेख है। मरकुस और यूहन्ना दोनों कहते हैं कि चेलों को अपना

परिचय देने के बाद यीशु उनके साथ नाव में बैठ गया (मरकुस 6:51; यूहन्ना 6:21)। केवल मत्ती ही पतरस के पानी के ऊपर चलने की नाटकीय कहानी को सामने लाता है। यीशु ने पतरस से कहा, ''**आ**!'' **पतरस** तुरन्त आज्ञा मानकर तूफ़ानी झील में नाव पर से उतर गया। यह पतरस के जीवन की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक होनी था। वास्तव में वह एक प्रचण्ड तूफ़ान के बीच गलील की झील के ऊपर **चला** था!

आयत 30. पानी के ऊपर चलते हुए पतरस का ध्यान यीशु से हट गया। उस ने अपने पैरों के नीचे पानी के चलने को देखा, **हवा** के ज़ोर को महसूस किया और **डर गया**। जब, **डूबने लगा**, **तो चिल्लाकर कहा**, ''**हे प्रभु, मुझे बचा**!'' (देखें 8:25)। जैसे ही उस का विश्वास डोला, उस ने यीशु पर भरोसा करना बन्द किया, वह डूबने लगा। पतरस अपने आप में वास्तव में संदेह करने वाला व्यक्ति नहीं था, क्योंकि उसे पक्का मालूम था कि वह पानी पर नहीं चल सकता। इसके बजाय उस ने अचानक यीशु पर भरोसा करना बन्द कर दिया। उसके डूबने का कारण यही था कि प्रभु में उस का विश्वास कम हो गया था।

आयत 31. प्रभु आगे बढ़कर पतरस को बहते पानी से बचाने से झिझका नहीं। **यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया**। वचन यह नहीं कहता कि यीशु ने आगे होकर पतरस को पकड़ा या पतरस ने प्रभु तक पहुंचने की जल्दी की। स्पष्टतया दोनों पानी के ऊपर एक दूसरे के निकट थे।

पतरस को बचाने के बाद यीशु ने **उससे कहा**, ''**हे अल्पविश्वासी, तू ने क्यों संदेह किया**?'' ''अल्पविश्वासी'' का अनुवाद यूनानी भाषा के मिश्रित शब्द (*oligopistos*) से किया गया है। यीशु ने कई बार अपने डगमगाते हुए चेलों को डांटने के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया (6:30; 8:26; 16:8; देखें 17:20)। ''अल्पविश्वासी'' लोग उनके बिल्कुल उलट हैं जिन्हें बड़ा विश्वास रखने के कारण यीशु ने उनकी तारीफ़ की, जैसे रोमी सूबेदार और कनानी स्त्री (8:10; 15:28)। इस संदर्भ में ''संदेह'' के लिए शब्द (*distazō*) केवल यहां और मत्ती 28:17 में मिलता है। इसका अक्षरश: अर्थ है ''दो भागों में बंटना।'' पतरस ने यीशु पर भरोसा किया, पर चाहे एक पल के लिए ही सही, उस ने संदेह भी किया। आर. टी. फ्रांस के साथ हम कह सकते हैं कि ''सच्चा विश्वास एक चित्त होकर यीशु पर ध्यान लगाना है।''[16]

आयत 32. इस संदर्भ में दो और आश्चर्यकर्म हुए। यीशु और पतरस के **नाव पर चढ़ते ही हवा थम गई**। इस बार यीशु ने तूफ़ान को बिना कुछ कहे थाम दिया (देखें 8:26)। दूसरा आश्चर्यकर्म जो उनके नाव में जाने पर हुआ, ''तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची, जहां वे जा रहे थे'' (यूहन्ना 6:21) केवल यूहन्ना में दर्ज है। अभी वे झील के बीच में थे, और अगले ही पल वे किनारे पर थे। तूफ़ान को चेलों की नाव बहा ले जाने पर वे झील के बीच में थे। उनके खेने के विरुद्ध सब लहरों और हवा के काम करने से पता नहीं वे यीशु के पहुंचने के समय कितनी दूर निकल गए होंगे। इसके अलावा हवा सामने से आ रही थी इसलिए सम्भवतया वह गलत दिशा में बह गए होंगे। तौभी जैसे ही यीशु ने नाव पर कदम रखा, वे सब अपनी मंजिल पर पहुंच गए, जहां उन्हें जाना था।

आयत 33. मरकुस रचित सुसमाचार कहता है कि जो कुछ यीशु ने किया था चेले उससे ''बहुत ही आश्चर्य करने लगे।'' इसके अलावा, ''वे उन रोटियों के विषय में न समझे थे, क्योंकि

उनके मन कठोर हो गए थे'' (मरकुस 6:51, 52)। यीशु के पांच छोटी रोटियों और दो छोटी छोटी मछलियों के साथ पांच हज़ार से अधिक लोगों को खिलाने को देखने के बाद उन्हें यीशु द्वारा की गई किसी भी बात पर चकित नहीं होना चाहिए। यह सबक मानने में उन्हें बहुत देर लग गई कि ''परमेश्वर'' या उसके पुत्र ''के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।''

उन्होंने यह कहते हुए कि ''**सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है**!'' यीशु को **दण्डवत** किया। ''दण्डवत'' के लिए यूनानी शब्द (*proskuneō*) का अनुवाद ''उपासना,'' ''झुकना,'' या ''घुटने टेकना'' किया जाता है (2:2 पर टिप्पणियां देखें)। पवित्र शास्त्र में यहां पहली बार यीशु को उसके अनुयायियों द्वारा ''परमेश्वर का पुत्र'' के रूप में जो मसीहा की पदवी है, माना गया (भजन संहिता 2:7) जो उसके परमेश्वर होने का संकेत है (26:63, 64)। यूनानी भाषा में ''परमेश्वर का पुत्र'' (*theou huios*) वाक्यांश में यह संकेत नहीं है कि इसका अनुवाद ''ईश्वर का एक पुत्र'' हो। यीशु के चेले, जो कि यहूदी थे, ऐसी बात नहीं कर सकते थे और मत्ती के पाठक जो यहूदी मसीही थे, उनके लिए इसका कोई अर्थ नहीं होना था। इसके बजाय ई. सी. कॉलवेल के सुझाए यूनानी व्याकरण के नियम के एक उदाहरण का वाक्यांश है जिसमें कहा गया है कि क्रिया शब्द से पहले आने वाली निश्चित बात में उपपद नहीं होता।[7] यीशु परमेश्वर का *पुत्र* है। यीशु के ईश्वरीय पुत्र होने का विषय मत्ती की पूरी पुस्तक में गुथा हुआ है।[8]

अतिरिक्त चंगाइयां (14:34-36)

[34]वे पार उतरकर गन्नेसरत में पहुंचे। [35]वहां के लोगों ने उसे पहचानकर आस-पास के सारे देश में समाचार भेजा, और सब बीमारों को उसके पास लाए, [36]और उससे विनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे; और जितनों ने उसे छुआ, वे चंगे हो गए।

चाहे आम तौर यीशु लोगों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान रखता था, परन्तु मत्ती ने इस समय की तरह उन समयों की भी बात की है जब यीशु ने भीड़ के लोगों को चंगाई दी (4:23, 24; 8:16, 17; 9:35; 12:15; 14:34-36; 15:30, 31)।

आयत 34. यीशु और चेले झील के पूर्व से जहां उस ने पांच हज़ार को खिलाया था पश्चिम की ओर **पार उतरे** (देखें 9:1)। भीड़ कफ़रनहूम और मगदला (मरियम मगदलीनी का गांव) के बीच एक छोटे से सुन्दर मैदानी इलाके **गन्नेसरत** में पहुंचे। ''गन्नेसरत'' के नाम का अर्थ ''राजकुमार का बाग'' या ''धनवानों का बाग'' हो सकता है। लगभग तीन मील लम्बा और एक मील चौड़ा अर्थात छोटा होने के बावजूद इसमें घनी आबादी थी।[9] जोसेफस ने इसे एक उपजाऊ क्षेत्र के रूप में वर्णित किया जिसमें अंजीर, जैतून, अखरोट और अंगूर जैसी भान्ति -भान्ति की फसलें होती थीं।[10] यह इतना प्रसिद्ध स्थान था कि गलील की झील को गन्नेसरत की झील भी कहा जाता था (लूका 5:1)।

गन्नेसरत नाम का सम्बन्ध न केवल मैदान से बल्कि नगर से भी था। यहूदी परम्परा के अनुसार, गन्नेसरत पुराने नियम वाले किन्नेरेत का ही यूनानी नाम है (यहोशु 19:35)। उस समय में गलील की झील को किन्नेरेत नामक ताल के नाम से जाना जाता था (यहोशु 13:27)।

आयत 35. गन्नेसरत के **लोगों**, जिन्होंने पहले भी यीशु के आश्चर्यकर्म देखे होंगे, ने **उसे पहचान लिया** और **आस-पास के सारे** (नगरों और गांवों सहित) **देश में समाचार भेज दिया** कि यीशु वहां फिर आया है। परिणाम यह हुआ कि लोगों की बड़ी भीड़ **सब बीमारों को उसके पास** लेकर आ गई।

आयत 36. उससे विनती करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे। उन्होंने लहू बहने वाली उस स्त्री के बारे में सुना होगा जिसने यीशु के वस्त्र की छोर को छुआ था और तुरन्त उस की बीमारी जाती रही थी (9:20, 21 पर टिप्पणियां देखें)। अपने ''वस्त्र के आंचल'' का अर्थ सम्भवतया वे **कोरें** हैं, जिन्हें यहूदी लोग व्यवस्था को मानते हुए अपने बाहरी वस्त्रों पर लगाते थे (गिनती 15:37-41; व्यवस्थाविवरण 22:12; देखें मत्ती 23:5)। चाहे चंगाई देने की सामर्थ उसके वस्त्र में नहीं थी, पर यीशु ने लोगों को डांटा नहीं; इसके बजाय जिनका विश्वास था, उन्होंने उसके वस्त्र को **छुआ** और **चंगे हो गए**।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

पतरस का विश्वास (14:22-33)

पतरस की कुछ बात है जो हम में से अधिकतर लोगों को उसके साथ मिला देती है। जब हम उसे मछली पकड़ते, प्रचार करते, अंगीकार करते, या इनकार करते हुए देखने की कल्पना करते हैं तो हमें अपने आपको उस की जगह रखना आसान लगता है। हमारी तरह आमतौर पर लड़खड़ाकर गिर जाता था, पर वह विश्वास की चोटी पर चढ़ गया। हमें यह सोचना अच्छा लगता है कि यदि पतरस को विश्वास के इतने महान पल मिल सकते हैं तो हम भी पा सकते हैं।

जब पतरस को विश्वास हो गया कि यीशु ही पानी के ऊपर चल रहा है, तो उस ने विनती की, ''हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे'' (14:28)। सबके लिए शायद पतरस के अपने लिए भी यह आश्चर्य की बात थी कि वह उस छोटी नाव में से निकलकर तूफ़ानी लहर के ऊपर चलने लगता है। उस का ध्यान यीशु पर टिका हुआ था। परन्तु जब उस ने हवा को महसूस किया और अपने नीचे झील को देखा तो वह डर गया और डूबने लगा। जब तक वह यीशु की सामर्थ पर निर्भर था, वह पानी पर चलता था। जब वह संदेह करने लगा तो वह भय में जकड़ा गया और डूबने लगा। अन्तर विश्वास का था।

टिप्पणियां

[1]''झील के बीच'' कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में मत्ती 14:24 में मिलता है। [2]लाइवी *हिस्ट्री ऑफ़ रोम* 36.24.1. पारम्परिक रूप में, यहूदियों ने रात को तीन पहरों में बांटा हुआ था: सूर्यास्त से 10:00 बजे सायं, 10:00 सांय से 2:00 बजे प्रात: और 2:00 बजे प्रात: से सूर्योदय तक (निर्गमन 14:24; न्यायियों 7:19; 1 शमूएल 11:11; विलापगीत 2:19)। [3]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14-28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 423. [4]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 231-32, 238-39. [5]यूहन्ना 4:26; 6:20, 35, 48, 51;

8:12, 18, 24, 28, 58; 10:7, 9, 11, 14; 11:25; 13:19; 14:6; 15:1, 5; 18:5, 6, 8. [6]फ्रांस, 239. [7]ई. सी. कोलवैल, ''ए डेफिनेट रूल फॉर द यूज़ ऑफ़ आर्टिकल इन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,'' *जरनल ऑफ़ बिब्लिकल लिटरेचर* 52 (1933): 12–21. [8]मत्ती 1:23; 2:15; 3:17; 4:3, 6; 8:29; 11:27; 14:33; 16:16; 17:5; 24:36; 26:63; 27:40, 43, 54; 28:19. [9]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइलोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:443 में विलियम डब्ल्यू. बुहलर, ''गन्नेसरेत।'' [10]जोसेफस *वार्स* 3.10.8.